

# गुप्त शासकों के सिक्कों पर अंकित वस्त्राभूषण तथा केश विन्यास का अध्ययन

Anita Kumari<sup>1\*</sup>, Dr. Vinod Kumar Yadavendu<sup>2</sup>

<sup>1</sup> Research Scholar, Magadh University, Bodhgaya

<sup>2</sup> Associate Professor, PG Department of Ancient Indian & Asian Studies, Magadh University, Bodhgaya

सार - भोजन के समान मानव-जीवन के लिए वस्त्र भी आवश्यक है। इसका प्रयोग सभ्य व्यक्ति द्वारा केवल ठण्ड से सुरक्षा के लिए ही नहीं किया गया, अपितु स्वच्छता और सौन्दर्यता के लिए भी किया गया। मुख्यतः वस्त्रों का चयन एक देश के मौसम पर आधारित होता है, परन्तु इसके साथ-ही-साथ स्थानीय रीति-रिवाज के आधार पर भी इनका स्वरूप निश्चित होता है। गुप्त सिक्के गुप्त युग में प्रचलित विभिन्न प्रकार के परिधानों की सूचना देते हैं। चूँकि सिक्के सामान्यतः राजाओं, रानियों तथा देवी - देवताओं का अंकन ही प्रदर्शित करते हैं, अतः इनके आधार पर सामान्यीकरण करते समय हमें सावधान रहना होगा। गुप्त-युग केवल राजनीतिक उपलब्धियों के लिए ही विख्यात नहीं है, अपितु इस गुप्त सिक्कों पर अंकित आकृतियों से धोती और साड़ी की कलात्मक चुन्नटें कमरबन्द की सुन्दरता से लगाई गईं। काल में भौतिक संस्कृति भी किसी से पीछे न रही। तत्कालीन उच्च वर्ग की वेश-भूषा पर प्रकाश पड़ता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर गुप्त- नरेश के केश घुँघराले प्रायः पीठ की ओर स्वतन्त्र रूप से लहराते हुए अंकित हैं। कभी-कभी इन सिक्कों पर अंकित राजा के शीर्ष पर घुँघराले केश विंग के समान प्रदर्शित किये गये हैं। कभी-कभी बड़े कलात्मक ढंग से बिखरे हुए केश शीर्ष पर प्रदर्शित किये गये हैं। कुछ सिक्कों पर घुँघराले केश दो पंक्तियों में गर्दन की ओर लटक रहे हैं। कुछ सिक्कों पर घुँघराले केश बड़े ही सुन्दर ढंग से तीन पंक्तियों में दिखाई देते हैं।

कुंजी शब्द - वस्त्राभूषण, केश विन्यास, सिक्कों

-----X-----

## परिचय

गुप्त शासकों के सिक्के सामाजिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं - 'ब्रह्मचर्य', 'गृहस्थ', प्राचीन भारतीय चिन्तकों ने जीवन को चार स्तरों अथवा आश्रमों, यथा 'वानप्रस्थ' तथा 'सन्यास आश्रमों' में विभक्त किया है। जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। हिन्दू समाज द्वारा यह जीवन की आदर्श-पद्धति मानी गयी। समय-समय पर कम-से-कम कुछ शासकों ने जीवन की उपर्युक्त व्यवस्था का अनुसरण करने का प्रयत्न किया और यह उनके अपने सिक्कों पर भी परिलक्षित होती है। यद्यपि सिक्कों द्वारा ब्रह्मचर्य आश्रम के विषय में जानकारी नहीं मिल पायी है, परन्तु गुप्त-शासकों के सिक्के 'गृहस्थ' जीवन के महत्व को प्रदर्शित करते हैं। उनकी कर्तव्यनिष्ठा का मूल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष था। सिक्कों पर प्रफुल्लित वैवाहिक जीवन की झाँकियाँ मिलती हैं। 'चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी' प्रकार के सोने के सिक्कों के राजनीतिक महत्व के अलावा चन्द्रगुप्त प्रथम

के जीवन में सामाजिक एवं धार्मिक महत्व को समझा जा सकता है।

## वस्त्राभूषण तथा केश विन्यास

### वस्त्र:

भोजन के समान मानव-जीवन के लिए वस्त्र भी आवश्यक है। इसका प्रयोग सभ्य व्यक्ति द्वारा केवल ठण्ड से सुरक्षा के लिए ही नहीं किया गया, अपितु स्वच्छता और सौन्दर्यता के लिए भी किया गया। मुख्यतः वस्त्रों का चयन एक देश के मौसम पर आधारित होता है, परन्तु इसके साथ-ही-साथ स्थानीय रीति-रिवाज के आधार पर भी इनका स्वरूप निश्चित होता है। गुप्त सिक्के गुप्त युग में प्रचलित विभिन्न प्रकार के परिधानों की सूचना देते हैं। चूँकि सिक्के सामान्यतः राजाओं, रानियों तथा देवी - देवताओं का अंकन ही प्रदर्शित करते हैं, अतः इनके आधार पर सामान्यीकरण करते समय हमें सावधान रहना होगा। गुप्त-युग केवल राजनीतिक उपलब्धियों के लिए ही

विख्यात नहीं है, अपितु इस गुप्त सिक्कों पर अंकित आकृतियों से धोती और साड़ी की कलात्मक चुन्नटें कमरबन्द की सुन्दरता से लगाई गईं। काल में भौतिक संस्कृति भी किसी से पीछे न रही। तत्कालीन उच्च वर्ग की वेश-भूषा पर प्रकाश पड़ता है। तथा सिकुड़न, सुन्दर ढंग से दुपट्टा धारण का तरीका, गाँठें- इस तथ्य के द्योतक हैं कि लोग पोशाक अथवा प्रसाधन के सौन्दर्यशास्त्र से अनभिज्ञ नहीं थे। प्रसाधन के महत्व को देखते हुए अमरकोश में कला को पाँच शब्दों आकल्प, वेश, नेपथ्य, प्रतिकर्म तथा प्रसाधन से सम्बोधित किया है।

गुप्त साम्राज्य के स्थापित होने के सैकड़ों वर्ष पहले तक उत्तर पश्चिमी भारत हिन्दू - ग्रीक, शकों और कुषाणों के अधीन रहा देशी और विदेशी संस्कृतियों के पारस्परिक संबंध और आदान-प्रदान से दोनों संस्कृतियाँ एक दूसरे का दृष्टिकोण समझ गयीं। यही महत्वपूर्ण कारण है कि गुप्त नरेशों को सिक्कों पर कुषाण वेश-भूषा में प्रदर्शित किया गया है, लेकिन सिक्कों पर अंकित वेश-भूषा से स्पष्ट हो जाता है कि बाद में उनका परिधान विशुद्ध भारतीय बन गया था आरामदायक तथा सुरुचिपूर्ण कटे सिले वस्त्रों ने श्रेष्ठ कलात्मक परन्तु गुप्तों के व्यवहारिक सामान्य बुद्धि को आकर्षित किया होगा। अतः परिधान के क्षेत्र में गुप्तों की रुचि का परिचय सिक्कों पर अंकित वस्त्रों से प्रतिबिम्बित होता है जहाँ उन्होंने कुषाणों के ऊनी लबादे को त्याग कर गांगेय घटी के मौसम के अनुकूल महीन और झीने वस्त्रों को पसन्द किया। सिक्कों पर सिले तथा बिना सिले वस्त्रों का अंकन मिलता है। कुषाण कालीन भारत में सिले वस्त्रों के प्रचलन ने एक व्यापक पैमाने पर सम्पर्क में आए भारतीयों की पोशाकों को प्रभावित किया। "कुषाण युग में राज दरबार की प्रथा के अनुसार दास-दासियाँ भी सिले कपड़े पहनने लगीं और यही प्रथा गुप्तकाल में भी प्रचलित रही। इस युग में विदेशों में भी दास-दासियों का आने का जैन साहित्य में उल्लेख है, जिससे ज्ञात होता है कि विदेशी दासियाँ अपने जातीय पहरावे पहनती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि राजमहल के अन्दर रहने वाली दासियों के वस्त्रों का प्रभाव दूसरों पर भी पड़ा होगा।

### गुप्त नरेशों की वेश-भूषा

#### शिरोवस्त्र:

सिक्कों पर अंकित गुप्त नरेश प्रायः टोपियाँ अथवा कभी-कभी शिरस्त्राण पहने अंकित किए गए हैं। शिरोवस्त्रों के अनुशीलन से निम्न विशेष प्रकार ज्ञात होते हैं

#### मौक्तिक जड़ित टोपी:

मौक्तिक जड़ित टोपियों के अंकन चन्द्रगुप्त - कुमारदेवी प्रकार समुद्रगुप्त के धनुर्धारी प्रकार तथा काच के सिक्कों पर मिलते हैं। चन्द्रगुप्त प्रथम की टोपी पर नुकीला शीर्ष दिखाई पड़ता है।

#### झूमर युक्त टोपी :

समुद्रगुप्त के धनुर्धारी प्रकार तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार सिक्कों पर झूमरों से अलंकृत टोपी प्रदर्शित की गई है। कभी-कभी चन्द्रगुप्त द्वितीय के अश्वारोही प्रकार के सिक्कों पर राजा मौक्तिक जड़ित झूमर युक्त टोपी पहने दिखाया गया है।

#### अर्द्धगोलाकार टोपी :

गुप्त नरेशों को कभी-कभी अर्द्धगोलाकार टोपी पहने सिक्कों पर देखते हैं। यह समुद्रगुप्त के दण्डधारी प्रकार पर देखी जा सकती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के पर्यक प्रकार के सिक्के पर यह मोतियों से अलंकृत हैं

#### शंक्वाकार टोपी :

कभी-कभी सिक्कों पर शंक्वाकार टोपी के अंकन प्राप्त होते हैं। समुद्रगुप्त के दण्डधारी प्रकार के सिक्कों पर गुप्त नरेश को यह शिरोवस्त्र पहने प्रदर्शित किया गया है चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर यह झूमरों से अलंकृत मौक्तिक जड़ित है।

#### अध्ययन का उद्देश्य

1. गुप्त शासकों के सिक्कों पर अंकित वस्त्राभूषण तथा केश विन्यास का अध्ययन
2. गुप्त-शासकों के सिक्के 'गृहस्थ' जीवन का अध्ययन

#### अनुसन्धान क्रियाविधि

इन विधियों के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा और अध्ययन के उद्देश्यों के विश्लेषण किया जा सकता है। गुप्त सिक्के गुप्त युग में प्रचलित विभिन्न प्रकार के परिधानों की सूचना देते हैं। चूँकि सिक्के सामान्यतः राजाओं, रानियों तथा देवी - देवताओं का अंकन ही प्रदर्शित करते हैं, गुप्त सिक्के गुप्त युग में प्रचलित विभिन्न प्रकार के परिधानों की सूचना देते हैं। चूँकि सिक्के सामान्यतः राजाओं, रानियों तथा देवी - देवताओं का अंकन ही प्रदर्शित करते हैं, अतः इनके आधार पर सामान्यीकरण करते समय हमें सावधान रहना होगा। गुप्त-युग केवल राजनीतिक उपलब्धियों के लिए ही विख्यात नहीं है, अपितु इस गुप्त सिक्कों पर अंकित आकृतियों से धोती और साड़ी की कलात्मक चुन्नटें कमरबन्द की सुन्दरता से लगाई

गई. काल में भौतिक संस्कृति भी किसी से पीछे न रही । तत्कालीन उच्च वर्ग की वेश-भूषा पर प्रकाश पड़ता है ।

### डाटा विश्लेषण

#### अधोवस्त्र:

गुप्त-युगीन सिक्कों पर राजाओं द्वारा धारण किये गये निम्न अधोवस्त्र प्राप्त होते हैं-

#### पायजामा

सिक्कों पर गुप्त- नरेशों को कुषाण-नरेशों की भाँति पायजामा धारण किये अंकित किया गया है । मुद्राशास्त्रियों ने इसे आंग्ल भाषा में 'ट्राउजर' कहा है । इसके दो प्रकार मिलते हैं .

1. पायजामा के निचले भाग एड़ी पर फीते द्वारा कसे हुए हैं तथा इनका ऊपरी भाग ढीला चुन्नटयुक्त और फूला हुआ है ।
2. यह कसा हुआ है । छल्लेदार धारियाँ अंकित हैं । यह आधुनिक चूड़ीदार पायजामा है अजन्ता चित्रकला में भी राजकुमारों तथा अन्य सैनिकों द्वारा चूड़ीदार पायजामा को धारण किये हुए अंकित किया गया है ।

इस वस्त्र की पहचान स्वस्थान अथवा सुथना से कर सकते हैं । यह सम्भवतः रेशमी वस्त्र का बना होता था, जिसका उल्लेख बाण ने किया है । सिक्कों पर पायजामा चुन्नटदार भी मिलते हैं । ऐसे चुन्नटदार पायजामों के अंकन समकालीन कला में भी मिलते हैं अग्रवाल महोदय के अनुसार लगभग प्रथम शताब्दी ई. पू. के आस-पास भारत में पायजामों का प्रचलन शकों के समय जारी हुआ ।

#### जाँघिया:

गुप्त कालीन सिक्कों पर जाँघिया के भी अंकन मिलते हैं । साहित्य में "सतुला", 'अर्ध-जाँघिका', 'अर्ध-जाँघाला' आदि कहा गया है समुद्रगुप्त के सिक्कों पर राजा जाँघिया धारण किये अंकित किया गया है व्याघ्र - पराक्रम प्रकार के सिक्कों में समुद्रगुप्त घुटनों के ऊपर तक पहुँचती जाँघिया धारण किये हैं धनुर्धारी तथा सिंह - निहन्ता प्रकार के कुछ सिक्कों पर कभी-कभी चन्द्रगुप्त द्वितीय जाँघिया पहने है

#### बिना सिले वस्त्र:

गुप्तकालीन सिक्कों पर कभी-कभी पुरुष आकृति बिना सिले वस्त्र, जैसे दुपट्टा, धोती और कमरबन्द कलात्मक रूप में धारण किये अंकित हैं ।

#### दुपट्टा:

प्रयोग में लाये गये दुपट्टे अति झीने एवं भारतीय परिधान होते थे, जिसे साहित्य में वर्णित 'उत्तरीय' से पहचाना जा सकता है एक ताँबे के सिक्के पर खड़े चन्द्रगुप्त द्वितीय को दोनों कन्धों पर पड़ा दुपट्टा जिसका एक छोर उनके बाँये हाथ में है और दूसरा छोर दाहिने कन्ध के ऊपर से पीछे जाते हुए दिखलाया गया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार के एक सिक्के पर दुपट्टा कन्धों पर दर्शाया गया है पर्यक प्रकार के सिक्कों पर दुपट्टे के दोनों सिरे दोनों कन्धों के पीछे लटक रहे हैं। परन्तु दण्डधारी प्रकार के एक सिक्के पर समुद्रगुप्त ने बड़े कलात्मक ढंग से दुपट्टा धारण किया है, इसका एक छोर दाहिनी बाँह में लटक रहा है । वक्ष को ढकते हुए दूसरा छोर बायीं बगल से आकर बायीं बाँह से नीचे लटक रहा है । इसकी सिलवटें दर्शनीय हैं यह शैली प्रायः सभी वर्गों में प्रचलित रही होगी । इसके अतिरिक्त इस तथ्य की पुष्टि तत्कालीन साहित्य और विदेशी लेखकों से भी होती है ।

#### गुप्त रानियों तथा देवियों के वस्त्र

सिक्कों पर उत्कीर्ण गुप्त नरेशों की रानियों और देवियों द्वारा सिले तथा बिना सिले वस्त्रों के निम्न अंकन मिलते हैं -

#### टोपी

सिक्कों पर अंकित नारी आकृतियों के शीर्ष मोती जड़ित प्रकाशादित्य के शासन-काल के सिक्कों तक इन्हें देखा जा सकता है अल्टेकर के अनुसार महारानी दत्त देवी किरीट धारण किये हैं । होकर मोतियों से जड़ित टोपी है । गंगा देवी इसी शीर्ष वस्त्र से अलंकृत हैं ।

#### कञ्चुक

टोपी से सुशोभित है। परन्तु यह किरीट न चन्द्रगुप्त-कुमारदेवी प्रकार के सिक्के के पुरोभाग पर अंकित कुमारदेवी पूरी बाँह का घुटने तक लम्बा कञ्चुक धारण किये है । समुद्रगुप्त के दण्डधारी प्रकार के सिक्कों पर देवी कञ्चुक धारण किये अंकित है । कभी-कभी कञ्चुक पट्टी द्वारा बाँध कर कसा हुआ प्रतीत होता है। गुप्तकालीन कला में भी कञ्चुक के अंकन मिलते हैं । अहिच्छत्र से प्राप्त मृण मूर्तियों में इस प्रकार के कुछ कञ्चुक सादे हैं । घुटने तक लम्बा कञ्चुक पवैया से प्राप्त एक स्त्री धारण किये है । इस कञ्चुक की बाँहें जो धनुषाकृति सा दिखाई

देता है। कसी हैं और नीचे का भाग अर्द्ध गोलाकार साहित्य में भी स्त्रियों द्वारा कञ्चुक धारण है, करने के उदाहरण दृष्टव्य हैं। कादम्बरी में चाण्डाल कन्या नीला कञ्चुक पहने हुए वर्णित है, जो उसके पैरों की पिण्डलियों तक नीचे लटकता था। इसी प्रकार हर्षचरित में सरस्वती की सखी मालती सफेद बारीक रेशम का पैरों तक लम्बा कञ्चुक पहने हुए बतायी गयी है।

### कूर्पासक

स्त्रियों को कूर्पासक पहने गुप्त सिक्कों पर प्रदर्शित किया गया है। धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों में लक्ष्मी आधी बाँह का कूर्पासक पहने दिखायी गयी है। अजन्ता चित्रकला में भी एक रानी हल्के रंग का कूर्पासक पहने है, जिसके किनारे पर जवाहिर बने हैं।

### चादर (दुपट्टा)

गुप्त सिक्कों पर अंकित स्त्री आकृतियाँ दुपट्टा (ओढ़नी) धारण किये अंकित हैं। चन्द्रगुप्त - कुमारदेवी प्रकार के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अंकित देवी के कन्धे चादर से ढके हैं।

कभी-कभी चादर का एक सिरा बाँये कन्धे को ढकता हुआ पीठ के पीछे गया है। कभी-कभी इन्हीं सिक्कों के पुरोभाग पर रानी के दोनों कन्धे चादर से ढके हुए हैं और कभी-कभी चादर द्वारा कन्धे ढके हैं जिसके दोनों सिरे नीचे बड़े सुन्दर ढंग से लहराते हुए अंकित हैं। समुद्रगुप्त के दण्डधारी प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर अंकित देवी के दोनों कन्धे पारदर्शी चादर द्वारा ढके हैं। बाँये कन्धे पर चादर की सिलवटें बड़ी ही आकर्षक हैं। कभी-कभी इस वर्ग के सिक्कों पर चादर वक्ष पर आड़े ढंग से प्रदर्शित की गयी है। कभी- कभी बाँये कन्धे पर सिलवटों की आधिक्यता वस्त्र को आकर्षक बनाती है और कभी-कभी चादर दाहिनी कोहनी को ढकते हुए सामने की ओर निकल कर पीठ के पीछे जाती है। अश्वमेध प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर अंकित दत्तदेवी 'चादर धारण किये हुए अंकित है। परशुधारी तथा वीणावादक प्रकार के सिक्कों पर देवी के कन्धों पर चादर अंकित है काच प्रकार के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अंकित देवी के दोनों कन्धों पर चादर सुन्दर ढंग से अंकित है, जिसके दोनों सिरे नीचे की ओर स्वतन्त्र ढंग से लटक रहे हैं। चन्द्रगुप्त द्वितीय के छत्र प्रकार के सिक्कों के पृष्ठभाग पर अंकित देवी के दोनों कन्धों पर चादर है दाहिने ओर बाँये कन्धों से सामने की ओर चादर के दोनों सिरे नीचे हवा में लहरा रहे हैं। सिंहनिहन्ता प्रकार के सिक्कों पर दाहिनी बाँह पर चादर का सुन्दर अंकन है।

### स्त्रियों के केश विन्यास:

गुप्त - सिक्कों द्वारा स्त्रियों के के वीणावादक प्रकार के सिक्कों के एक केश विन्यास का भी परिचय मिलता है। समुद्रगुप्त वर्ग के पृष्ठ भाग पर अंकित देवी के केश गूँथकर शीर्ष के ऊपर जूड़ा के

रूप में प्रदर्शित किये गये हैं। इसी प्रकार के अंकन चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर मिलता है। इसी नरेश के अश्वारोही प्रकार के सिक्कों पर अंकित देवी को इसी प्रकार के केश विन्यास में प्रदर्शित किया गया है। केश विन्यास की यही शैली छत्र प्रकार के सिक्कों पर भी देखने को मिलती है। कुमारगुप्त के सिक्कों पर सिर के पीछे जूड़ा बाँधने इसमें मध्य में सीमन्त निकालकर कंधी करके पीछे एक गोल छोटे केश को एकत्रित किया जाता था। यह शैली कुमारगुप्त प्रथम के के पृष्ठभाग पर देखी जा सकती है प्रकार' तथा व्याघ्र-निहन्ता प्रकार सकता है। अथवा बड़े जूड़े के रूप में अश्वारोही प्रकार के सिक्कों। इस शैली का कलात्मक अंकन छत्र के सिक्कों पर भी देखा जा सामान्यतः गुप्त सिक्कों के पृष्ठभाग पर अंकित देवी के साथ के केश मुक्ताजाल से ढँके होते थे। गुप्त - कालीन कला में थी इसका अंकन मिलता है

### निष्कर्ष

विविध रोचक शैलियाँ जुड़ती गयीं और स्थानीय प्रथम तथा समाज के विभिन्न वर्गों तथा स्त्री- पुरुष, धनी - निर्धन के सामर्थ्य और रुचि के अनुसार इनमें भेद बढ़ते गये गुप्त-कालीन मुद्रा - साक्ष्यों से गुप्त-नरेश तथा स्त्रियों के केश विन्यास पर रोचक प्रभाव पड़ता है। मुद्राओं से विग के समान केश विन्यास के प्रति अभिरुचि प्रतीत होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के धनुर्धारी प्रकार के सिक्कों पर गुप्त- नरेश के केश घुँघराले प्रायः पीठ की ओर स्वतन्त्र रूप से लहराते हुए अंकित हैं। कभी-कभी इन सिक्कों पर अंकित राजा के शीर्ष पर घुँघराले केश विग के समान प्रदर्शित किये गये हैं। कभी-कभी बड़े कलात्मक ढंग से बिखरे हुए केश शीर्ष पर प्रदर्शित किये गये हैं-। कुछ सिक्कों पर घुँघराले केश दो पंक्तियों में गर्दन की ओर लटक रहे हैं। कुछ सिक्कों पर घुँघराले केश बड़े ही सुन्दर ढंग से तीन पंक्तियों में दिखाई देते हैं। आधुनिक युग की भाँति कभी-कभी बड़े ही कलात्मक ढंग से त्रिस्तरीय सुसज्जित केश विन्यास देखने को मिलते हैं।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] महा.. शन्तिपर्व, 69.64-65; अर्थ., 8.96.1; मनु., 9.294; कामन्दक., 1.16; अग्नि, 233.12.
- [2] महा., आदिपर्व, 69 3-4; शन्तिपर्व में सेना के छः अंग बताये गये हैं। वही, 103.38-39.
- [3] उत्तराध्ययन सूत्र, 22.12 तथा देखिए, जातृधर्मकथा, 8.129.
- [4] खारबेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में कहा गया है कि के दूसरे वर्ष में शातकर्णिक के विरुद्ध हय, गज, रथ,

थी, इ. आई., जिल्द 45, पृ0 8; इसी प्रकार की रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ लेख में भी है। डी. सी. 1, पृ0 215.

- [5] रामायण, बालकाण्ड, 69.3; युद्धकाण्ड, विराट पर्व सर्ग 68 13; मैक्रिन्डल, वही, 4, 304-14; कामन्दक, 6.271; वाटर्स, 76, पृ0 134;
- [6] इ. आई, बी. एच. सी., 1.11-15, 2, वही, 5.6-14. न्यू क्रान. 1921, पृ0 321,
- [7] वही, 6.10; एलन, बी. एम. सी. जी. डी., 2.14. बी. एच. ., 16.13; जे. ए. एस.बी., 1925, न्यू सीरीज, 3.7, 16.14, 17.6, 10, 13-14, 18.14.
- [8] बी. एच. सी., 28.1-7, 11-12, 14-15, 29.8-10, 15. वही, 27. अग्रवाल, हर्षचरित, पृ0 148, 150.
- [9] बी. एच. सी., 3.1, 8.8, 14, 10.3, 9.
- [10] के. टी. तेलंग द्वारा सम्पादित, मुद्राराक्षस, पृ0 129-30, बम्बई 1928. जे. आई. एस. ओ. ए., 1949, पृ0 18-20 .
- [11] बी. एच. सी., भूमिका, पृ0 153. वही. रिचर्ड जेफरी, वाकाब्युलरी आफ फारेन वर्ड्स इन पुराण, अल्लेकर द्वारा उद्धृत, वही. बी. एच. सी, 1.12.
- [12] भाले, गदा आदि शस्त्रास्त्र का भी प्रयोग कि पदाति सैनिक तलवार, भाला, धनुष- महा., द्रोणपर्व, 34.15, इसके अनुसार पदाति सैनिक का प्रमुख आयुध धनुष-बाण था, किन्तु वे तलवार, विभिन्न प्रकार के करते थे । जैन ग्रन्थों से भी ज्ञात होता है बाण आदि लेकर चलते थे औपपातिक सूत्र 31, पृ0 132; विवाक सूत्र, 2, पृ0 13;

---

#### **Corresponding Author**

**Anita Kumari\***

Research Scholar, Magadh University, Bodhgaya